"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 10 अगस्त 2017 को ग्राम पंचायत रिस्पा, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना "मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता" के तहत **"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान"** पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत रिस्पा के लगभग **40** किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक**,** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि डॉ. राजेश शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक**,** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, श्रीमती विनोद कुमारी, प्रधान ग्राम पंचायत, रिस्पा, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन तथा स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह अपनी स्वादिष्ट गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों पर पाया जाता है । यह किन्नौर के लोगों के आय के मुख्य स्त्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग परिचित नही हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वो दिन दूर नही जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएँगे और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया के वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह के विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों

को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्रीमती विनोद कुमारी, प्रधान ग्राम पंचायत, रिस्पा, ने संस्थान के प्रयास की सराहना की और कहा चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए जो पहल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने की है उससे उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

मुख्य अतिथि, डॉ. राजेश शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ कर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा वृक्षों का किन्नौर के लोगों कि आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है तथा यह इस क्षेत्र की अग्रणी प्रजातियों में से एक है जो किन्नौर जैसे नाज़ुक क्षेत्र की ढीली एवं नाज़ुक मिट्टी के कटाव को रोकने की भी क्षमता रखता है । इसके साथ उन्होंने चिलगोजा प्रजाति के नष्ट होने से पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव के बारे में लोगों को अवगत करवाया तथा यह आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से ग्राम पंचायत, रिस्पा के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोज़ा संरक्षण से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी किसानों एवं बागवानों दी गई । डॉ. राजेश शर्मा, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवता के पौधों के चयन के आवश्यकता' के बारे में भी बताया । उन्होंने यह भी आग्रह किया कि यदि वनों में अच्छी गुणवता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को आवश्य दें ताकि वे उसी गुणवता वाले पोधों की नर्सरी तैयार कर सकें । इससे वन विभाग इन पौधों को वनों में वृक्षरोपित कर अच्छी गुणवत्ता वाले चिलगोजा वन तैयार कर सकें जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानो को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया ।

सामाजिक कार्यकर्ता, कुमारी रतन मंजरी नेगी ने 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को बताया । उन्होंने यह भी कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ।

श्री नीमा छेरिंग नेगी, वन खंड अधिकारी, मूरंग वन परिक्षेत्र ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । इसी दौरान लोगों ने

चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारियों के समक्ष रखी एवं वन अधिकारियों ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आशवासन दिया ।

श्री अशवनी कुमार, अनुसंधान सहायक, ग्रेड-I, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये' के बारे में लोगों को चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर क्षेत्र प्रदर्शन किया । इसी दौरान पांच मल्टी एंगुलेर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान की गई ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ. राजेश शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, श्रीमती विनोद कुमारी, प्रधान ग्राम पंचायत, रिस्पा, वक्ताओं

तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला का भी धन्यवाद किया ।

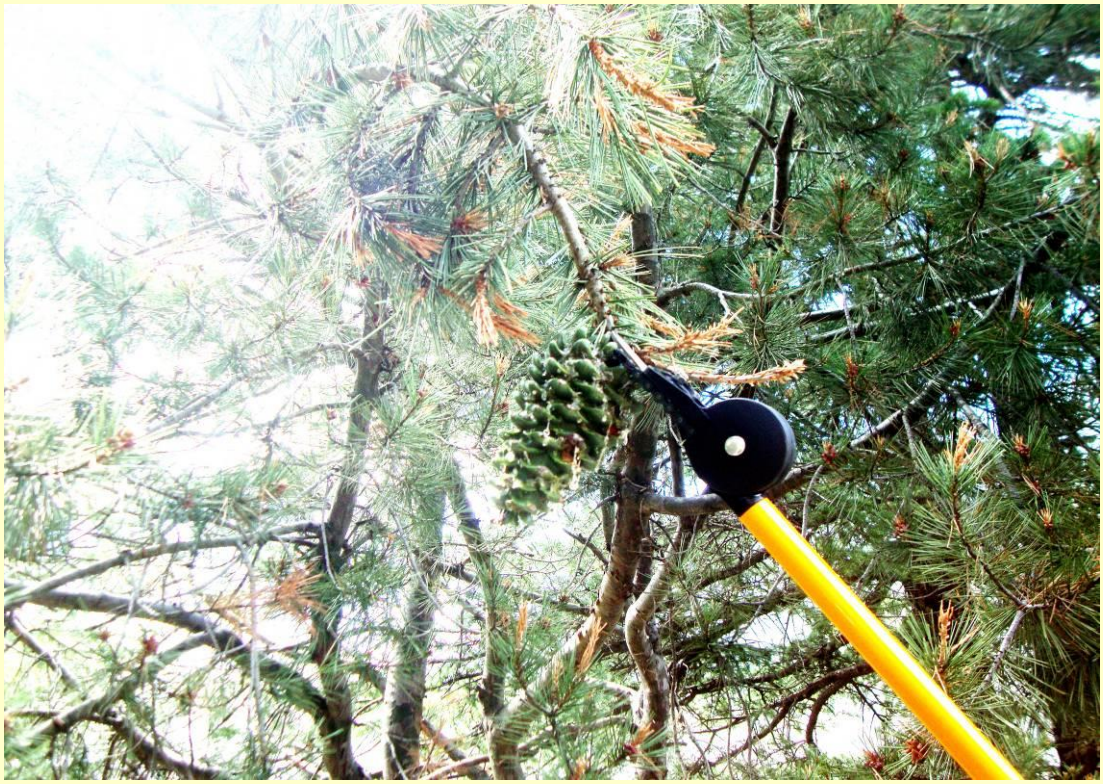

NABARD
चिलगोज़ा के शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान
पर
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक: 10 अगस्त 2017
स्थान: ग्राम रिस्पा (किन्नौर, हि.प्र.)
आयोजक : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला
सौजन्य : राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला

NABARD
चिलगोज़ा के शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान
पर
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

मीडिया कवरेज

चिलगोजे के संरक्षण बारे बताया

रिकांगपिओ : रिब्बा में आयोजित शिविर में उपस्थित वन मंडलाधिकारी व ग्रामीण सामूहिक चित्र में। (रिपन)

रिकांगपिओ, 10 अगस्त (रिपन): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जिला किन्नौर की ग्राम पंचायत रिब्बा व रिस्पा में किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक विधि के माध्यम से जागरूकता प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में उक्त ग्राम पंचायतों के लगभग 80 किसानों व बागवानों ने भाग लिया। इन शिविरों में ग्रामीणों को चिलगोजा के संरक्षण बारे जानकारी दी गई। प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ किन्नौर वन मंडल अधिकारी एंजल चौहान द्वारा किया गया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला वैज्ञानिक स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा भारत में एक मेवे के रूप में जाना जाता है जोकि धातुवर्द्धक होने के साथ-साथ भूख को भी बढ़ाता है।

पंजाब केसरी ई-पेपर Fri, 11 August 2017
epaper.punjabkesari.in//c/21259808

चिलगोजा का संरक्षण करना सिखाया

रिब्बा-रिस्पा पंचायत में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

हिमाचल दस्तक। रिकांगपिओ

✔ शिविर में 80 किसानों और बागवानों ने ली ट्रेनिंग

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा किन्नौर की ग्राम पंचायतों रिब्बा और रिस्पा में चिलगोजा के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से जागरुकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें ग्राम पंचायतों के लगभग 80 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया। वैज्ञानिक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला डॉ. स्वर्ण लता ने मुख्यातिथि प्रधान ग्राम पंचायत रिब्बा एवं रिस्पा तथा उनकी पंचायत के सहयोगियों का स्वागत किया और कहा कि चिलगोजा भारत में एक मेवे के रूप में जाना जाता है। चिलगोजा पाइन के पेड़ में बीज होते हैं और हजारों साल से एक खाद्य स्रोत के रूप में इस्तेमाल होते आ रहे हैं। इसकी तासीर गर्म होती है तथा यह धातुवर्धक होता है तथा भूख को बढ़ाता है। चिलगोजा का प्रसंस्करण बहुत ही मेहनत का काम है पर इसका पोषण मूल्य बहुत अधिक है। चिलगोजे को घरेलू संसाधनों से विकसित किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि भारत में हिमाचल प्रदेश के किन्नौर और चंबा के साथ जम्मू कश्मीर में भी पाया जाता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि किन्नौर के किसान और बागवान इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे तथा इसके साथ चिलगोजा के वृक्षों तथा जंगलों का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ वन मंडल अधिकारी किन्नौर एंजेल चौहान ने किया। उन्होंने कहा कि चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है तथा यहां के निवासियों की आर्थिकी तथा पर्यावरण संतुलन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

एंजेल चौहान नेआशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा प्रजाति का दोहन करेंगे। इससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहे। परस राम जिला विकास प्रबंधक, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक किन्नौर ने कहा कि भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा। पंचायत प्रधानों ने भी लोगों को संबोधित किया।

चिलगोजा के संरक्षण पर मंत्र

किन्नौर की ग्राम पंचायतों रिब्बा-रिस्पा में किसान-बागबान किए जागरूक

जिला ब्यूरो प्रमुख

रिकांगपिओ, 10 अगस्त। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जिला किन्नौर की ग्राम पंचायत रिब्बा व रिस्पा में किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक विधि के माध्यम से जागरूक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में उक्त ग्राम पंचायतों के लगभग 80 किसानों व बागबानों ने भाग लिया। इन शिविरों में ग्रामीणों को चिलगोजा के संरक्षण के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किन्नौर वन मंडल अधिकारी एंजल चौहान द्वारा किया गया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला वैज्ञानिक स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा भारत में एक मेवे के रूप में जाना जाता है जो कि धातुवर्धक होने के साथ साथ भूख को भी बढ़ाता है। उन्होंने कहा कि चिलगोजे का प्रसंस्करण बहुत ही मेहनत का काम है पर इसका पोषण मूल्य बहुत अधिक है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में प्रदेश के किन्नौर व चंबा के साथ-साथ जम्मू कश्मीर में भी पाया जाता है तथा इसका प्रयोग भोजन व तेल मालिश के रूप में भी किया जाता है। जिला किन्नौर में चिलगोजे सामाजिक आर्थिक व धार्मिक महत्व है तथा इसके संरक्षण के लिए अनुसंधान द्वारा यह परियोजना तैयार की गई जिसका राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण द्वारा इसे वित्तपोषित किया गया जिसके लिए वह बैंक के भी आभारी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इन शिविरों के माध्यम से जिला किन्नौर के किसानों व बागबानों को चिलगोजे के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक विधि के बारे में जानकारी दी जा रही है जिससे चिलगोजा के वृक्षों व जंगलों का भी संरक्षण होगा। इस अवसर पर किन्नौर वन मंडल अधिकारी एंजल चौहान ने कहा कि चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है तथा यहां के निवासियों की आर्थिकी तथा पर्यावरण संतुलन में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण शिविर के द्वारा जिला किन्नौर के किसान व बागबान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा प्रजाति का दोहन करेंगे, जिससे यह पौधा तथा इसका जंगल भविष्य में सुरक्षित रहेगा।